WWJMRD 2020; 6(12): 6-9
www.wwjmrd.com
International Journal
Peer Reviewed Journal
Refereed Journal
Indexed Journal
Impact Factor MJIF: 4.25
E-ISSN: 2454-6615

बालकिशन कुमावत
शोध छात्र इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, भारत

Correspondence:
बालकिशन कुमावत
शोध छात्र इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, भारत

राजस्थान की सशस्त्र क्रांति में जननायकों के योगदान का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

बालकिशन कुमावत

शोध सांराश–
राजस्थान में स्वाधीनता आंदोलन चलाने में अनेक जन नायकों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। विभिन्न जन आंदोलन के माध्यम से वे मातृभूमि की मुक्ति के पवित्र लक्ष्य के लिए लड़ते रहे। उनकी कष्ट सहने की शक्ति, सहिष्णुता, त्याग, बलिदान और देशप्रेम की गाथाएं आज भी मन को रोमांचित और प्रेरित करती है। राजस्थान के प्रमुख जननायकों में अब्बास बेग मिर्जा अकबर खाँ, भैरूसिंह जोधा, हृदय दयाल भट्नागर, सलीम खाँ, गुल मोहम्मद, हीरा सिंह, मुन्नवर खाँ, नबीशेर खाँ, बाल मुकन्द बिस्सा, दामोदर राठी, नानक भील, केसरी सिंह बारहट, जोरावर सिंह बारहट, मोहन लाल सुकाडिया, हरदेव सिंह जोशी, घासी राम चौधरी, सरदार अली, अमर चन्द भाटीया, ठाकुर कुशाल सिंह, गोविन्द गिरी, मोतीलाल तेजावत, गोपाल सिंह खरवाह, विजय सिंह पथिक, अर्जुन लाल सेठी, गोकुल भाई भट्ट, नयनूराम शर्मा, जानकी देवी बजाज, नारायणी देवी वर्मा, जमना लाल बजाज, गोकुल लाल असावा, बाबा नर हरिदास, कपूर चन्द पाटनी, ऋषि दत्त मेहता, स्वामी केशवानन्द, शोभा राम कुमावत, पं. युगल किशोर चतुर्वेदी, बाबूराज बहादूर, हरदेव जोशी, पं. अभिन्न हरी, टीकाराम पालीवाल, सागरमल गोपा, कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी, चन्दमल बहड, श्याम जी कृष्ण वर्मा का भारत की सशस्त्र क्रांति में राजस्थान के इन वीर जननायकों का महत्वपूर्ण योगदान परिलक्षित होता है।

Keywords: सशस्त्र, अर्जुन, बजाज, भट्ट, व्यास, मेहता, तात्कालीक, मास्टर, आउवा, मीश्रण, राष्ट्रीय आन्दोलन, राजस्थान, योगदान, प्राणोत्सर्ग।

शोध विस्तार–
राजस्थान में प्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजी शासन नहीं था किन्तु राजाओं की अयोग्यता एवं शक्तिहीनता के कारण राज्यों के आंतरिक शासन में अंग्रेजी हस्तक्षेप बढ़ता गया और देशी नरेशों की तुलना में अंग्रेजी रेजीडेण्ट या पोलीटिकल एजेण्ट की शक्ति बढ़ती गयी। इन परिस्थितियों के चलते साधारण जन को दुहरी–तीहरी गुलामी का भार झेलना पड़ा। एक गुलामी राजा महाराजा की थी तथा दूसरी अंग्रेज रोजीडेण्ट की और उसके माध्यम से अंग्रेज सरकार की जागीरदारी क्षेत्र में तीसरी गुलामी सामंत जागीरदार की बढ़ जाती थी। उस समय सारे राजस्थान में सामंती शासन एवं शोषण का बोल बाला था विदेशी सरकार इस शोषण की रक्षक नहीं पोषण भी थी। अंग्रेजी प्रभुत्व की स्थापना के कुछ समय बाद ही राजस्थान में उसका विरोध शुरू हो गया। सन्धि के बावजूद कुछ नरेशों ने अंग्रेज विरोधी रूख अपनाया बांकीदास तथा अन्य कवियों ने अंग्रेजों का प्रभुत्व स्वीकार करने वाले राजाओं की घोर निंदा की ओर सा घात्व जन समुदाय को विदेशी गुलामी के प्रति सचेत किया अंग्रेज अधिकारियों ने शासकों का समर्थन करते हुए उनके सामंतों के अधिकारों को कम करने का प्रयत्न किया तो इससे अनेक सामंत अंग्रेज विरोधी हो गये। 1857 ई. के जन विद्रोह में इन सामंतों/जागीरदारों ने खुलकर अथवा छिपे तौर से विद्रोहियों की सहायता की। देशी राज्यों में बढ़ते अंग्रेजी हस्तक्षेप को साधारण जन समुदायों ने भी पसंद नहीं किया। अंग्रेजी सुधारों जिसमें सतीप्रथा पर रोक और विदेशी पादरियों द्वारा हिन्दु व ईस्लाम धर्मों की निन्दा करते हुए ईसाई धर्म के प्रचार ने भी साधारण जन को शंकाशील बनाया तथा जन मानस अंग्रेजी प्रभुत्व के खिलाफ हो गई। 1857 ई. के विद्रोह से पहले भी राजस्थान में अनेक धटनाओं के माध्यम से अंग्रेज विरोधी भावनाऐं प्रकट होती रही। जयपुर में पोलीटिकल एजेण्ट के सहायक कप्तान ब्लेक की हत्या कर दी गयी। जोधपुर में भीमजी राठौड़ नामक सामन्त ने वहां के पोलीटिकल एजेण्ट लुडलों पर हमला किया। जनसाधारण में अंग्रेज विरोधी भावनाऐं इतनी प्रबल थी कि अंग्रेजी ध्वनियों पर हमला कर उन्हें लूटने वाले शेखावाटी के राजपूत– वीर डूंगर सिंह व जवाहर सिंह को जनता ने लोक नायको जैसा सम्मान

दिया। उनकी वीरता की प्रशंसा में गीत लिखे गये और उन्हें लोकगीतों के रूप में गाया जाने लगा।

राजस्थान के प्रमुख जन नायक

राजस्थान के ऐसे प्रमुख जननायकों का विवरण निम्नानुसार है–

अर्जुन लाल सेठी– अर्जुन लाल सेठी का जन्म सितम्बर 1880 में जयपुर में हुआ था। उन्होंने सन् 1907 में जयपुर में वर्धमान विद्यालय की स्थापना की। सेठी जी को संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी, अरबी और पालि भाषा का अच्छा ज्ञान था। तत्कालीन जयपुर के महाराजा ने उन्हें राज्य का प्रधानमंत्री बनाने की पेशकर की थी किन्तु राष्ट्र प्रेम के कारण उन्होंने इसे यह कहते हुए इन्कार कर दिया कि "अर्जुन लाल नौकरी करेगा तो अंग्रेजों को भारत से कौन निकालेगा।" उन्होंने अजमेर को अपना कार्यक्षेत्र बनाया तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेकर हिन्दु–मुसलिम एकता के लिए काम किया। वे निरंतर क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़े रहे। दिसम्बर 1941 में उनका निधन हो गया।

जमनालाल बजाज– गांधी जी के अनुयायी जमनालाल बजाज का जन्म नवम्बर 1889 में हुआ। जमनालाल बजाज विचारों से पूरे राष्ट्रवादी थे। आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण वे कई बार जेल गए। गांधी जी ने जब नव जीवन साप्ताहिक का हिन्दी संस्करण प्रारंभ किया तब उन्होंने समूचा वित्तीय भार उठाया। उन्होंने अंग्रेजों द्वारा दिए गए रायबहादुर के खिताब को वापस लौटा दिया था। गांधी जी के आग्रह पर वे जीवन के अंतिम दिनों तक गौ–सेवा में लगे रहे। फरवरी 1942 में उनका निधन हो गया।

माणिक्य लाल वर्मा– माणिक्य लाल वर्मा का जन्म बिजौलिया ठिकाना में हुआ था। वर्मा जी ने अपना प्रारंभिक जीवन अध्यापक के रूप में शुरू किया था किन्तु पथिक जी के सम्पर्क में आने के बाद सामन्ती शोषण और उत्पीड़न के विरूद्ध आंदोलन में जुट गए। वे एक अच्छे कवि और गायक थे। बिजौलिया किसान आंदोलन के समय जुड़ी सभाओं में जब वे अपनी ओजस्वी शैली में गाते थे तो हताश और निराश मन में भी उत्तेजना का संचार हो जाता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वे वृहत्तर राजस्थान के प्रधानमंत्री बने और आजीवन शोषित एवं पीड़ित व्यक्तियों की सेवा करते रहे। सन् 1959 में उनका निधन हो गया।

हरिभाऊ उपाध्याय– हरिभाऊ उपाध्याय का जन्म तत्कालीन ग्वालियर राज्य में मौरासा गांव में सन् 1893 में हुआ था। सन् 1920 से 1925 तक वे गांधी जी के सानिध्य में रहे और सन् 1926 में राजस्थान आ गए। यहां आने के बाद वे यहां की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों में संलग्न रहे। सन् 1927 में उन्होंने हटूंडी (अजमेर) में गांधी आश्रम की स्थापना की। गांधी जी के आदेश पर वे नमक सत्याग्रह में भाग लेकर जेल गए। आजादी के पश्चात् अजमेर–मेरवाड़ा के मुख्यमंत्री रहे तथा अजमेर का वृहत राजस्थान में विलय होने के बाद वे राजस्थान के मंत्री मण्डल में मंत्री रहे। सन् 1972 में उनका निधन हो गया।

गोकुल भाई भट्ट– गोकुल भाई भट्ट का जन्म सन् 1899 में सिरोही राज्य के हाथलग्राम में हुआ था। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में विदेशी वस्त्रों की होली जलाने, नमक सत्याग्रह, मध्यपान निषेध तथा धरना आदि गतिविधियों का नेतृत्व किया। इन्होंने सिरोही राज्य प्रजामण्डल की स्थापना की। ये देशी राज्य प्रजा परिषद के अध्यक्ष भी बने। उनका निधन जयपुर में सन् 1986 में हुआ।

जयनारायण व्यास– राजस्थान का प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी जयनारायण व्यास का जन्म सन् 1899 में जोधपुर में हुआ। उन्होंने सामन्तशाही के खिलाफ लोगों का आह्वान किया। उन्होंने जागीरदारी प्रथा की समाप्ति के साथ रियासतों में उत्तरदायी शासन के लिए आवाज उठायी। वे सन् 1927 में "तरूण राजस्थान" पत्र के संपादक बने। सन् 1951 से 1954 तक राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे। वे जीवन पर्यन्त राजनीति में सक्रिय रहते हुए जनता की सेवा में लगे रहे। सन् 1963 में उनका निधन हो गया।

बलवन्त सिंह महता– बलवन्त सिंह महता का जन्म सन् 1900 में उदयपुर में हुआ था। वे मेवाड़ प्रजामण्डल के प्रथम अध्यक्ष थे। वे अनेक बार उदयपुर में सत्याग्रह चलाते हुए गिरफ्तार हुए। वे क्रांतिकारियों के सहयोगी रहे। उन्होंने हल्दीघाटी में बम बनाने की प्रक्रिया स्थानीय युवकों को सिखायी। उन्होंने आदिवासी क्षेत्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे भारतीय संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य भी रहें। जनवरी 2003 को इनका उदयपुर में निधन हो गया।

भोगीलाल पण्डया– भोगीलाल पण्डया का जन्म सन् 1904 में डूंगरपुर जिले में हुआ। 15 वर्ष की आयु में डूंगरपुर में उन्होंने एक विद्यालय की स्थापना की। इसके बाद उन्होंने बच्चों को प्रौढ़ो के लिए पाठशाला स्थापित करना प्रारंभ किया। वागड़ सेवा मंदिर के नाम से यह स्कूल प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने रियासती शासन के विरूद्ध अनेक सभाओं का आयोजन किया तथा सन् 1944 में डूंगरपुर में प्रजामण्डल का गठन किया। राजस्थान के मंत्री मंडल में वे मंत्री रहे तथा राजस्थान खादीग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष भी रहे। वे एक सत्यनिष्ठ, निष्ठावान और लोकसेवा के लिए पूर्णतः समर्पित गांधी युग के एक जीवन्त प्रतीक के रूप में जाने जाते हैं।

मास्टर आदित्येन्द्र– मास्टर आदित्येन्द्र का जन्म सन् 1907 में भरतपुर जिले में हुआ था। उन्होंने अध्यापन कार्य के साथ–साथ छात्रों में राष्ट्रीय भावना को जाग्रत करने का कार्य किया। सन् 1942 में वे भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के कारण गिरफ्तार हुए। सन् 1954 से 1960 तक राज्य सभा के सदस्य रहे। वे राजस्थान विधानसभा में सदस्य व मंत्री भी रहे।

प्रमुख क्रांतिकारी/अमर शहीद

केसरी सिंह बारहठ– केसरी सिंह बारहठ का जन्म नवम्बर 1872 में मेवाड़ राज्य की शाहपुरा रियासत के ग्राम देवपुरा खेड़ा में हुआ था। प्रसिद्ध क्रांतिकारी, कवि केसर सिंह बारहठ ने अपना सारा जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित किया इन्होंने मेवाड़ के महाराणा फतहसिंह को 'चेतावणी रा चूंगट्या' के रूप में सोरठे लिखकर लार्ड कर्जन के दिल्ली दरबार में जाने से रोका था। क्रांतिकारी प्रतापसिंह बारहठ इन्हीं के पुत्र थे। इनका समस्त परिवार राजस्थान के स्वतंत्रता आंदोलन में न्यौछावर हो गया।

राव गोपाल सिंह– राव गोपाल सिंह खरवा एक प्रमुख क्रांतिकारी थे। वे गुप्त सैनिक संगठन "वीर भारत सभा" से जुड़े हुए थे। राव गोपाल सिंह का मुख्य कार्य क्रांतिकारियों के लिए अस्त्र–शस्त्र की स्थापना करना था। क्रांतिकारियों ने फरवरी सन् 1915 को समस्त भारत में एक ही दिन सशस्त्र क्रांति करने का निर्णय लिया था। अजमेर, नसिराबाद पर कब्जा करने का उत्तरदायित्व गोपाल सिंह व उसके सहयोगियों को सौंपा दिया, किन्तु इस योजना की सूचना अंग्रेजों को लग जाने से गोपाल सिंह खरवा को गिरफ्तार कर लिया गया। अवसर पाकर वे फरार हो गए। किन्तु अधिक समय तक वे बाहर नहीं रह सके उन्हें पुनः नजरबन्द कर दिया गया। सन् 1920 में ही वे रिहा हो सके।

सागरमल गोपा– अमर शहीद सागरमल गोपा का जन्म जैसलमैर के सम्पन्न ब्राहम्ण परिवार में हुआ था। वे एक निष्ठावान कार्यकर्ता थे। राष्ट्रीयता की भावना उनमें कूट–कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने तत्कालीन शासकों की गलत नीतियों का डटकर विरोध किया और अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषदों के अधिवेशनों में भाग लेकर क्रांतिकारी गतिविधियों को जारी रखा। असहयोग आंदोलन में भी सागरमल गोपा ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इन्हें सन् 1941 में राजद्रोह के अभियोग में गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में कठोर यातना के कारण अप्रैल सन् 1946 को वे शहीद हो गए।

प्रताप सिंह बारहठ– अमर शहीद प्रतापसिंह बारहठ ठाकुर केसरी सिंह बारहठ के पुत्र थे। इन्हें लार्ड हार्डिंग्स के जुलूस पर बम फेंकने व क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने के कारण बंदी बना लिया गया। मई 1918 को मात्र 22 वर्ष की आयु में वे शहीद हो गए।

जिससे अन्य कोई मां ना रोए– बरेली जेल में प्रताप सिंह बारहठ से राज उगलवाने के लिए घण्टों मेहनत करने वाले चार्ल्स क्लीवलैण्ड ने जब कहा कि 'तुम्हारी मां तुम्हारे लिए बहुत रोती है तब प्रताप ने जवाब दिया– लेकिन मैं सैकड़ों माताओं के रोने का कारण नहीं बन सकता। मेरी मां को रोने दो– जिससे अन्य कोई मां ना रोए।'

रूपाजी, करपाजी– बेगूं के किसान आंदोलन के दौरान जब रूपाजी व करपा जी 13 जुलाई 1923 को किसानों की सभा में भाषण दे रहे थे तब अंग्रेज अफसर ट्रेंच ने गोली चलवा दी। अंग्रेजों की गोली से दोनो किसान शहीद हो गए।

नाना भाई खांट (भील)– डूंगरपुर राज्य में जन जाग्रति हेतू सेवा संघ द्वारा पाठशालाएं खोली गई। राज्य के पुलिस अधिकारी ने नाना भाई को पाठशाला बन्द करने के लिए कहा। उनके मना करने पर पुलिस ने उनकी हत्या कर दी।

कालीबाई– नाना भाई के शहीद होते ही पाठशाला के दूसरे अध्यापक सेगा भाई को भी फौज ने क्रूरता से पीटा और उन्हें वाहन के पीछे घसीटकर ले जाने लगे। किसी का साहस नहीं हुआ कि कोई आगे आकर इसका प्रतिरोध करें। उसी समय 13 वर्षीय भील बालिका कालीबाई जो घास काटकर आयी थी, वह भीड़ को चीरती हुए वाहन के पीछे दौड़ी। उसने दांतली से अपने गुरू सेगा भाई के कमर पर बंधी रस्सी काट दी तथा सेगा भाई को बचा लिया। उसी समय वाहन में बैठी फौज ने कालीबाई पर गोली चला दी। जिससे अल्पआयु में ही वह बालिका शहीद हो गई।

सन् 1857 की क्रांति में राजस्थान के कई क्रांतिकारियों ने अपनी शहादत दी। प्रमुख शहीदों का जो निम्नानुसार है–

लाला जयदयाल और मेहराब खाँ– कोटा महारावल के दरबार में लाला जयदयाल वकील थे। एक दिन उन्होंने अंग्रेज अधिकारियों की वार्ता, जिसमें देश भक्तों को कुचलने की योजना थी, को सुन लिया। ऐसी परिस्थिति में उन्होंने कोटा में ही नियुक्त रिसालेदार मेहराब खाँ को साथ लिया और दोनों ने कोटा की सेना को अंग्रेजों के विरूद्ध प्रेरित किया। कोटा के सैनिकों पर इसका प्रभाव पड़ा और वे विद्रोह पर उतर पड़े। 15 अक्टूबर, 1857 को कोटा में भीषण संघर्ष हुआ। सैनिक छावनी में आग लगा दी गई। इस प्रकार कोटा क्रांतिकारियें के अधिकार में रहा, किन्तु शेष भारत में विद्रोहियों की हार हो जाने से इसका प्रभाव कोटा पर भी पड़ा तथा वहां पर पुनः ब्रिटिश प्रभाव स्थापित हो गया। अनत में मेहराब खाँ और जयदयाल को तोपो से उड़ा दिया गया।

आउवा के ठाकुर खुशाल सिंह– आउवा के ठाकुर खुशाल सिंह ने अंग्रेज विद्रोहियों का नेतृत्व किया। इनके नेतृत्व में क्रांतिकारियों की सेना दिल्ली की ओर बढ़ी सितम्बर 1857 को बिठोड़ा (पाली) स्थान पर अंग्रेजों की सेना से मुठभेड़ हई, जिसमें अंग्रेज पराजित हुए। ठाकुर खुशाल सिंह की आत्मशक्ति से यह विजय मिली। उनकी वीरता और बहादुरी की गाथा आज भी राजस्थानप के लोकगीतों में गाई जाती है। इसके अलावा आसोप, आलनियावास आदि के जागीरदारों ने भी क्रांतिकारियों को सहयोग किया।

सूर्यमल्ल मीसण– कोटा पर अंग्रेजी सैनिकों का अधिकार हो जाने पर उन्होंने जनता पर अत्याचार करने शुरू कर दिए। उस समय कवि सूर्यमल्ल मीसण ने अपने गीतों मेंइन अत्याचारों का हृदय विदारक वर्णन किा। सूर्यमल्ल बूंदी के दरबारी कवि थे। उन्होंने इस क्रांति के समय में विभिन्न जागीरदारों को अंग्रेजों के विरूद्ध पत्र लिखे तथा अपने पत्रों में राजस्थान के शासकों और जागीरदारों को अंग्रेजों के विरूद्ध संगठित होने का आह्वान किया।

रावत केसरी सिंह एवं रावत जोधसिंह– मेवाड़ में भी कुछ सामन्त थे, जिन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध क्रांतिकारियों को सहयोग किया। उनमें सलूम्बर के रावत केसरी सिंह तथा कोठारिया के रावत जोधसिंह का नाम प्रमुख है। इन्होंने क्रांतिकारियों की सहायता की। बीमार एवं घायल सैनिकों की सेवा की तथा आन्दोलनकारियों की स्त्रियों को शरण देकर अंग्रेजी सैनिकों को सलूम्बर में प्रवेश करने से रोका।

ताराचंद पटेल– सन् 1857 की क्रांति में राजस्थान के अमर शहीदों में ताराचंद पटेल का नाम मुख्य रूप से लिया जाता है। ताराचंद पटेल टोंक के निवासी थे और निम्बाहेडा में मुख्य पटेल के रूप में नियुक्त थे। अंग्रेजी कर्नल जैक्सन की सेना में निम्बाहेडा पर आक्रमण किया तो इन्होंने उसे रोकने में सतर्कता दिखाई। बाद में जब अंग्रेजों ने निम्बाहेडा पर अधिकार कर लिया तब ताराचंद को गिरफ्तार कर तोप के गोलों से उड़ा दिया गया।

निष्कर्षः– राजस्थान में रियासती शासक, सामन्तों और ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के मध्य गठबन्धन का धीरे–धीरे जनता ने विरोध करना प्रारम्भ किया। सन् 1818 तक सिरोही को छोड़कर सभी रियासतों में संधियों के माध्यम से अंग्रेजों की सर्वोच्चता स्थापित हो चुकी थी। राजस्थान में अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध किसान और जनजातियों का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। इनमें प्रमुख रूप से धाकड़, मीणा, गरासिया और भील समुदाय ने भाग लिया। किसान आन्दोलन में बिजौलिया बेगू अलवर (नीमूचरणा) के किसान आन्दोलन प्रमुख है।

संदर्भ सूचीः–

1. अहीर राजीव ''आधुनिक भारत का इतिहास'' स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि. दिल्ली।
2. प्रतियोगिता दर्पण, सितम्बर 2006
3. अभिव्यक्ति पक्षिक पत्रिका
4. चन्द्रा विपिन ''भारत का स्वतंत्रता संघर्ष'' हिन्दी माध्यमिक कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली।
5. दैनिक भास्कर ''संपादकीय पृष्ठ
6. बी.एल. पानगड़िया, ''राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, पृ. 22
7. जैन डॉ. हुकुम चन्द एवं माली डॉ. नारायण लाल सैनी ''राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य परम्परा एवं विरासत,'' राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर, पृ. 142–143

8. तापन प्रो. जुग मन्दिर ''राजस्थान में स्वतंत्रता संघर्ष'' भारत प्रिन्टिग प्रेस, अलवर, पृ. 29
9. क्रोनिकल मासिक पत्रिका 2014
10. दृष्टिकोण मंथन 2019, पृ. 21–22
11. हिन्दुस्तान संवादकीय पृष्ठ
12. राजस्थान पत्रिका सैण्ड जैकेट।